आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2018-20

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 6 अंक : 8 अप्रेल-2019 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा

कुलपति सन्देश

जैविक पशुपालन हमारी समृद्धि का आधार है

प्रिय किसान एवं पशुपालक भाइयों और बहनों !

राम–राम सा।

जैविक पशुपालन एक अत्यंत लाभदायक व्यवसाय है। खेती में रासायनिक खादों, कीटनाशकों तथा पशुओं में उपचार के लिए एलोपैथिक दवाओं के बढ़ते हुए उपयोग के कारण मानव व पशु स्वास्थ्य के साथ–साथ हमारे पर्यावरण पर भी बुरा प्रभाव पड़ रहा है। ऐसे आदानों का उपयोग करना जैविक पशुपालन में एक बड़ी बाधा है। आज के युग में मानव अपने स्वास्थ्य के प्रति बहुत जागरुक हो गया है जिसके कारण जैविक पशु उत्पादों की विश्व स्तर पर मांग बहुत बढ़ गई है। जैविक पशुधन सह कृषि का उत्पादन करके ज्यादा से ज्यादा आमदनी ली जा सकती है। इसमें मानव जाति और पशुओं का कल्याण व पर्यावरण सुरक्षा का भाव निहित्त है। वैकल्पिक चिकित्सा विधियों के उपयोग से पशुओं की रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि होती है, पशु तनाव से मुक्त होकर अपना नैसर्गिक व्यवहार प्रकट करते हैं। जैविक पशुधन प्रबंधन में ऐसा उच्च गुणवत्ता युक्त आहार, लवण और चारा दिया जाना चाहिए जो पशु के पोषण की जरूरतों को पूरा कर सके। किसी पशु फार्म को जैविक फार्म में परिवर्तित करने के लिए पशु चिकित्सक के माध्यम से पशुपालकों को पशुओं में होने वाले रोगों की रोकथाम के तरीकों की जानकारी कर लेनी चाहिए। पशु रोगों की पहचान करके रोगाणु के जीवन चक्र को समझ कर उसे खत्म करने के तरीके अपनाने चाहिए। इसके लिए वैकल्पिक उपचार की विधियों द्वारा उपचार से पुनः समान्य होने के समय का निर्धारण कर लेना चाहिए। जैविक पशुधन की सुरक्षा के लिए नए पशुओं को खरीदते समय बीमारियों की वर्तमान स्थिति का पता हो अथवा उनके संक्रामक बीमारियों से मुक्त होने का प्रमाण देख लेना चाहिए। नए पशुओं को अलग रखने के दौरान सभी गायों के थनों को थनैला रोग अथवा दूसरे रोगों की जांच करवा लेनी चाहिए। पशुओं का ऐसा आवास होना चाहिए जो उनकी सभी जैविक, भौतिकी और व्यवहारिक आवश्यकताओं को पूरा कर सके। पशुओं में होने वाले साधारण रोगों व उनके जैविक उपचार की पूरी जानकारी रखनी चाहिए। वेटरनरी विश्वविद्यालय बीकानेर परिसर में जैविक पशुधन उत्पादन तकनीक केन्द्र कार्यशील है। पशुपालक जैविक पशुपालन के तकनीकी परामर्श के लिए राजुवास टोल फ्री हैल्प लाइन के माध्यम से संपर्क कर सकते हैं। हमारे अच्छे और समृद्ध कल के लिए जैविक पशुपालन व उत्पादन समय की मांग है।

मेरी शुभकामनाएं।

(प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा)

वेटरनरी कॉलेज के शल्य चिकित्सा विभाग में महाराजा गंगासिंह ट्रस्ट द्वारा प्रदत्त छोटे पशुओं की लेप्रोस्कोपी शल्य चिकित्सा इकाई का शुभारंभ करते हुए कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा एवं राज्यश्री कुमारी

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

–महात्मा गांधी

मुख्य समाचार

छोटे पशुओं में शल्य चिकित्सा की लेप्रोस्कोप मशीन शुरू

वेटरनरी कॉलेज के शल्य चिकित्सा विभाग में महाराजा गंगासिंह ट्रस्ट द्वारा पशुओं की शल्य चिकित्सा और उपचार की लेप्रोस्कोप इकाई का 2 मार्च को लोकार्पण किया गया। लेप्रोस्कोप मशीन द्वारा छोटे पशुओं में कम चीर–फाड़ और दर्द रहित शल्य चिकित्सा संभव हो सकेगी। महाराजा गंगासिंह ट्रस्ट की अध्यक्ष प्रिन्सेज राज्यश्री कुमारी और वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने विधिवत् इस इकाई का लोकार्पण किया। इस अवसर पर प्रिंसेज राज्यश्री कुमारी ने कहा कि पूर्व महाराजा करणी सिंह जी की स्मृति में 30वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष पर यह लेप्रोस्कोप इकाई ट्रस्ट द्वारा प्रदान की गई है। ऐतिहासिक बिजेयसिंह भवन के रखरखाव और सौन्दर्य के लिए राजुवास को बधाई देते हुए कहा कि पशुओं के कल्याण कार्यों में ट्रस्ट सदैव सहयोगी बना रहेगा। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने महाराजा गंगासिंह ट्रस्ट द्वारा पशुओं की शल्य चिकित्सा कार्यों के लिए अब तक वेटरनरी कॉलेज को दी गई लगभग एक करोड़ रूपए राशि की सहायता के लिए आभार जताते हुए पशुओं के कल्याण कार्यों में उनके योगदान एवं पशुओं के प्रति प्रेम भावना की सराहना की। राजुवास के शल्य चिकित्सा एवं रेडियोलॉजी विभाग के प्रमुख डॉ. प्रवीण विश्नोई ने कहा कि ट्रस्ट द्वारा उपलब्ध करवाए गए आधुनिकतम शल्य चिकित्सा के उपकरणों और सुविधाओं की सहायता से पशुधन और पशुपालकों को बड़ी राहत मिली है। शल्य चिकित्सा विशेषज्ञ डॉ. टी.के. गहलोत ने कहा कि उन्नत चिकित्सा उपकरणों की मदद से राजुवास में पशुचिकित्सा की परम विशेषज्ञ सेवाएं शुरू की जा सकी है।

वेटरनरी कॉलेज नवानियां, वीसीआई की प्रथम अनुसूचि में शामिल

वेटरनरी विश्वविद्यालय के संघटक पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियां (उदयपुर) की स्नातक डिग्री को भारतीय पशुचिकित्सा परिषद् की प्रथम अनुसूचि में शामिल किया गया है। केन्द्रीय सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा जारी अधिसूचना के तहत वेटरनरी कॉलेज, नवानियां को वीसीआई की अनुसूचि में शामिल किया गया है। वेटरनरी कौंसिल ऑफ इंडिया की सलाहकार समिति की अभिशंषा के बाद यह नोटिफिकेशन कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय भारत सरकार द्वारा जारी किया गया है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने इस निर्णय को एक उपलब्धि बताते हुए कहा कि इससे केन्द्र एवं राज्य सरकार से अनुदान और सहायता राशि मिलने का रास्ता प्रशस्त हो गया है।

अनुसंधान परिषद् की बैठक संपन्न

वेटरनरी विश्वविद्यालय में 5वीं अनुसंधान परिषद् की बैठक 14 मार्च को कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा की अध्यक्षता में आयोजित की गई। कुलपति सचिवालय में आयोजित बैठक को सम्बोधित करते हुए कुलपति प्रो. शर्मा ने कहा कि समय की मांग को देखते हुए राजुवास के सभी पशुधन अनुसंधान केन्द्रों पर जैविक पशुधन उत्पादन हमारी प्राथमिकता में शामिल होने चाहिए। उन्नत अनुसंधान तकनीकों को पशुपालकों तक पहुँचाने के लिए भी सचेष्ट होकर कार्य करने की जरूरत है। उन्होंने सभी पशुधन अनुसंधान केन्द्रों व अनुसंधान परियोजनाओं के प्रभारियों को निर्देश दिए कि वे सभी पशुधन उत्पादों को जैविक मोड पर लाने के लिए गंभीरता पूर्वक कार्य शुरू करें। कुलपति ने कहा कि राजुवास के सभी फॉर्म की उपजाऊ भूमि को हरा चारा, प्रमाणित बीज और कीमती फसल उत्पादन के उपयोग में लिया जाए। विश्वविद्यालय में विभिन्न प्रकार की 38 अनुसंधान परियोजनाओं पर कार्य चल रहा है।

प्रसार शिक्षा परिषद की बैठक सम्पन्न
उद्यमिता प्रशिक्षण पशुपालकों की वर्तमान आवश्यकता : कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा

वेटरनरी विश्वविद्यालय की प्रसार शिक्षा परिषद की बैठक 15 मार्च को कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा की अध्यक्षता में आयोजित की गई। कुलपति सचिवालय सभागार में बैठक को सम्बोधित करते हुए कुलपति प्रो. शर्मा ने कहा कि राज्य में वेटरनरी विश्वविद्यालय की स्थापना के बाद आठ वर्षों में पशुपालन क्षेत्र में किए जा रहे अनुसंधान और प्रसार शिक्षा कार्यों के सकारात्मक परिणाम मिल रहे हैं। कुलपति प्रो. शर्मा ने बताया कि पशुपालकों व किसानों की वर्तमान में जरूरत को देखते हुए विश्वविद्यालय उद्यमिता प्रशिक्षण पर अपनी प्राथमिकता रखेगा। विश्वविद्यालय विभिन्न जिलों में स्थापित पशुचिकित्सा अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्रों के माध्यम से किसानों को उद्यमिता प्रशिक्षण प्रदान करेगा। प्रसार शिक्षा की बैठक में वी. यू.टी.आर.सी. एवं के.वी.के. प्रभारी अधिकारियों ने अपने प्रगति–प्रतिवेदन प्रस्तुत किए। बैठक में प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. ए.पी. सिंह सहित प्रसार शिक्षा परिषद के सदस्य, डीन डॉयरेक्टर एवं पशुचिकित्सा प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों के प्रभारी अधिकारियों और वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

चिकित्सकीय जैव अपशिष्ट निस्तारण पर रेलवे नर्सिंग कार्मिकों का प्रशिक्षण संपन्न

राजुवास पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट निस्तारण तकनीकी केंद्र द्वारा 16 मार्च को उत्तर पश्चिम रेलवे के नर्सिंग कार्मिकों का "जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट के प्रबंधन और निस्तारण" विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण वेटरनरी कॉलेज के पशु जन स्वास्थ्य विभाग में सम्पन्न हो गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ॰ एम. एल. मीणा, लालगढ़ अस्पताल, उत्तर पश्चिम रेलवे ने कहा कि चिकित्सा कार्मिकों को जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट का निस्तारण पूरी ज़िम्मेदारी के साथ करना चाहिए। समारोह में वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता एवं संकाय अध्यक्ष प्रो. राकेश राव एवं राजुवास के अनुसंधान निदेशक प्रो. आर. के. सिंह भी उपस्थित रहे। राजुवास के पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट तकनीकी

निस्तारण केंद्र की प्रमुख अन्वेषक एवं प्रशिक्षण संयोजक डॉ. रजनी जोशी ने एक दिवसीय प्रशिक्षण में अपशिष्ट निस्तारण के प्रायोगिक तौर–तरीकों की जानकारी दी। डॉ. मोहम्मद अयूब ने जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट के अनुचित निस्तारण के कारण पर्यावरण संकट के बारे में समझाया। डॉ. मनोहर सेन ने जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट के पृथक्करण का एवं डॉ. पंकज मंगल ने पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट के निस्तारण के लिए काम में आने वाली तकनीकों का प्रायोगिक प्रदर्शन किया ।

दांतीवाड़ा (गुजरात) वेटरनरी कॉलेज के 46 विद्यार्थियों ने राजुवास का शैक्षणिक भ्रमण किया

गुजरात के सरदार कुशीनगर कृषि विश्वविद्यालय, दांतीवाड़ा के 46 पशुचिकित्सा विद्यार्थियों के एक दल ने 16 मार्च को डॉ. अरूण पटेल व डॉ. संदीप पटेल के नेतृत्व में वेटरनरी विश्वविद्यालय का शैक्षिक भ्रमण किया। राजुवास के सहायक प्राध्यापक डॉ. अभिषेक गुप्ता ने विद्यार्थियों को पशुचिकित्सा क्लिनिक्स का भ्रमण करवाया। विद्यार्थियों ने पशु शल्य चिकित्सा हेतु उन्नत रोग निदान और उपचार के उपकरणों, सी.टी. स्केन, रेडियो डॉयग्नोस्टिक इमेजेज तथा पशु चिकित्सा औषधीय विभाग में ब्लड बैंक, सघन पशुचिकित्सा इकाई में उपचार कार्यों की जानकारी ली।

प्रो. धूड़िया को इण्डियन सोसाइटी फॉर एडवांसमेन्ट ऑफ कैनाइन प्रेक्टिस का फैलो सम्मान

इण्डियन सोसाइटी फॉर एडवांसमेन्ट ऑफ कैनाइन प्रेक्टिस द्वारा वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशुपोषण विशेषज्ञ प्रो. आर.के. धूड़िया को "फैलो" अवार्ड प्रदान किया गया है। खालसा वेटरनरी कॉलेज, अमृतसर में "इण्डियन सोसाइटी फॉर एडवांसमेन्ट ऑफ केनाइन प्रेक्टिस" की श्वानों के कल्याण हेतु नए क्षितिज की खोज विषय पर 26 से 28 फरवरी तक आयोजित 3 दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के दौरान यह फैलो सम्मान प्रो. धूड़िया को प्रदान किया गया। खालसा कॉलेज चैरिटेबल सोसायटी के सचिव सरदार राजिंद्र मोहन सिंह छीना, तमिलनाडु पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, चैन्नई के कुलपति प्रो. सी. बालाचन्द्रन, छत्तीसगढ़ कामधेनु विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एन.पी. दक्षिणकर, नानाजी देशमुख पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, जबलपुर के कुलपति पी.डी. जुयाल एवं सोसायटी के महासचिव प्रो. ए.के. श्रीवास्तव द्वारा यह फैलो सम्मान उन्हें पशुचिकित्सा एवं पशुपोषण विज्ञान में उत्कृष्ट कार्यों के लिए प्रदान किया गया।

शिक्षण पद्धतियों पर राजुवास में ऑरियेन्टेशन प्रशिक्षण शुरू प्रभावी और कुशल शिक्षण कार्य से ही सशक्त पीढ़ी का मार्ग प्रशस्त होगाः कुलपति प्रो. शर्मा

वेटरनरी विश्वविद्यालय के 33 नवागंतुक सहायक प्राध्यापकों का शिक्षण पद्धतियों पर 21 दिवसीय ऑरियेन्टेशन प्रशिक्षण कार्यक्रम 28 मार्च से शुरू हो गया। प्रशिक्षण में राजुवास के तीनों महाविद्यालयों के फैकल्टी सदस्य और अन्य संस्थानों के सहायक प्राध्यापक भाग ले रहे हैं। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने प्रशिक्षण के उद्घाटन सत्र में कहा कि प्रभावी और कुशल शिक्षण कार्य से ही शिक्षक की पहचान बनती है। अध्यापन के प्रति गंभीरता और विद्यार्थियों की संतुष्टि से ही पशुचिकित्सा व्यवसाय को वास्तविक पहचान मिल सकती है। उन्होंने नव सहायक प्राध्यापकों का आह्वान किया कि वे शिक्षण, अनुसंधान व शिक्षा प्रसार में विविधताओं और चुनौतियों को एक अवसर के रूप में लेकर सशक्त भावी पीढ़ी तैयार कर सकते हैं। वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता प्रो. राकेश राव ने भी सम्बोधित किया। प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के समन्वयक प्रो. ए. पी. सिंह ने बताया कि 21 दिवसीय प्रशिक्षण में शिक्षण पद्धतियों के साथ–साथ व्यावसायिक कुशलता, प्रशासनिक और वित्तीय प्रबंधन पर 50 से भी अधिक विशेषज्ञों की वार्ताएं रखी गई है।

अप्रेल माह में पशु प्रबंधन कैसे करें

प्रिय पशुपालक भाईयों! होली के बाद से ही दिन के तापमान में बढ़ोतरी होने लगी है और इस बदलते मौसम में कई प्रकार के संक्रमण व चारे–पानी में कमी की संभावना है। इस समय फसल की आवक शुरू हो जाती है तथा छोटे पशु जैसे भेड़ व बकरी खेतों में विचरण करते हुए ज्यादा खा लेते हैं, जिससे फड़किया रोग की संभावना बहुत अधिक होती है। इस मौसम में बड़े पशुओं में न्यूमोनिया भी काफी हो रहा है। पानी व चारे की कमी से पशुओं में इस मौसम में निर्जलीकरण व पाईका की बहुत अधिक संभावना रहती है। पाईका एक ऐसी स्थिति होती है जिसमें पशु, मिट्टी, लकड़ी, चूना, पत्थर, चमड़ा, कपड़ा, मृत पशु, हड्डी या अन्य कोई पदार्थ खाता है, पशु कमजोर हो जाता है और पशु उत्पादन निम्न स्तर तक गिर जाता है। यह अवस्था वैसे तो सभी पशुओं में देखने को मिलती है लेकिन सबसे ज्यादा दुधारू पशु जैसे गाय व भैंस प्रभावित होते हैं। इसके अतिरिक्त पाईका से जुड़ी हुई एक समस्या बहुत ही घातक बीमारी को जन्म देता है जिसे बोटुलिज्म कहते हैं। जब पाईका से ग्रस्त पशु अन्य मृत पशु, हड्डी आदि सड़ा खाद्य खाता है तो उनमें उपस्थित बोटुलाईनम नामक जहर पशु शरीर में प्रवेश कर जाता है। इसकी मात्रा के अनुसार पशु में बीमारी के लक्षण आते हैं : जैसे पशु को चलने में परेशानी होती है, पशु बैठ जाता है और उठ नहीं सकता, लकवा ग्रस्त हो जाता है और पशु की मौत हो जाती है।

अतः पशुओं को उपरोक्त समस्याओं से बचाने के लिए पशुपालकों को निम्न बातों पर ध्यान देकर पशु प्रबंधन करना चाहिए–

- ❖ पशुओं को निर्जलीकरण से बचाने के लिए उचित मात्रा में स्वच्छ पानी उपलब्ध करायें।
- ❖ पशुओं को पर्याप्त मात्रा में लवण मिश्रित चारा–दाना देवें।
- ❖ पशुओं को इस समय पर्याप्त हरा चारा देवें।
- ❖ इस मौसम में संक्रमण से बचाव के उचित प्रबंध करें।
- ❖ भेड़ व बकरियों को खेतों में अधिक समय के लिए न चरने दें।
- ❖ रोगों से बचाव के लिए खुरपका–मुंहपका, लंगड़ा बुखार व फडकिया रोग के टीके अवश्य लगवा लेवें।

– प्रो. ए. के. कटारिया
प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

प्रशिक्षण समाचार

वीयूटीआरसी चूरू द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 6, 11, 12, 13, 14 एवं 16 मार्च को गांव मनाफरसर, घड़सीसर, रोलासर, पूनरास, राणासर बीछाण एवं ढाणा भाखरान गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 81 महिला पशुपालकों सहित कुल 183 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) द्वारा 11, 12, 18, 19, 22 एवं 26 मार्च को गांव 3 इ छोटी, अमरपुरा, लाठावाली, महियावाली, 8 बीजीडी एवं 22 एसटीजी गांवो में तथा दिनांक 8 मार्च को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 221 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सिरोही केन्द्र द्वारा 251 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 6, 7, 8, 9, 11, 18 एवं 19 मार्च को गांव बहादुरपुरा, कानाकोलर,नितोडा, रायपुर, सिखों का जोड, काछोली एवं वडवज गांवो में तथा दिनांक 12 मार्च को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 251 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

बाकलिया (नागौर) केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू द्वारा 12, 13, 14, 16, 18, 19 एवं 23 मार्च को गांव अड़कसर, टोडास, हुडील, खोरड़ा, खोरंडी, जिजोट एवं घाटवा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 199 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

अजमेर केन्द्र द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 1, 6, 7, 8, 12, 13 एवं 23 मार्च को गांव चोरी, भगवानपुरा, नांद, हरपुरा, कडेल, भगवानपुरा एवं बिडला गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 240 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, डूंगरपुर द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 5, 7, 9, 12, 13 एवं 14 मार्च को गांव रेलड़ा, नान फलां, लक्ष्मणपुरा, बालाडीट, खेरी एवं ढानी गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 236 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कुम्हेर (भरतपुर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 5, 6, 7, 9, 18 एवं 19 मार्च को गांव नगला मैथना, सलेमपुराकलां, हिडौला, चौखड़ा, जानूकी एवं जटपुरा गांवो में तथा दिनांक 22 मार्च को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 39 महिला पशुपालकों सहित कुल 108 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

टोंक जिले में पशुपालकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, टोंक द्वारा 11, 14, 19, 22 एवं 23 मार्च को गांव हमीरपुर, पालड़ा, चान्दसेन, धोली एवं देवली भांची गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 152 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

लूनकरणसर (बीकानेर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, लूनकरणसर द्वारा 5, 8, 16, 22, 25 एवं 26 मार्च को गांव 1 एलकेडी, चक–290, 3डीएलएम, चक–247, जैसां एवं मेहराणा गांवों में तथा दिनांक 23 मार्च को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 192 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी कोटा द्वारा 288 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 8, 9, 11, 14, 16, 18, 19, 22 एवं 23 मार्च को गांव हनोतिया, रंगपुर, सारोला, ख्यावदा, किशनपुरा तकिया, गुरला, जाडोल, काल्याखेडी एवं भटवाडा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 288 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

बोजुन्दा (चितौड़गढ़) केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा (चितौड़गढ) द्वारा 7, 8, 9, 13 एवं 18 मार्च को गांव भंडारिया, नेतावलगढ़ का खेड़ा, बीडघास, घटियावली खेडा एवं थुकरावा गांवों में तथा दिनांक 15 मार्च को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 144 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, धौलपुर द्वारा 234 पशुपालकों का प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 6, 7, 8, 9 एवं 11 मार्च को गांव दाडकी, अरूवा, आम का पुरा, अन्दोअ का पुरा एवं बल्दियापुरा गांवों में तथा दिनांक 12 एवं 13 मार्च को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 234 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, जोधपुर द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 11, 12, 13, 19, 23 एवं 25 मार्च को गांव भवाद, गंगाणी, बिंजवारिया, मेलावास, बजंरगनगर एवं खाडीखुर्द गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 91 महिला पशुपालकों सहित कुल 180 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा प्रशिक्षण शिविर

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़) द्वारा 7, 8, 9, 11, 12, 26 एवं 27 मार्च को गांव सरदारगढीया, फेफाना, रामसरा, थालड़का, चाईया, भगवान एवं नेहरावाली ढाणी गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 268 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशुओं के स्वास्थ्य, प्रजनन क्षमता तथा उत्पादकता पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव

भारत में पशुधन के विशाल संसाधन हैं जो लोगों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति और खाद्य सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण हैं। किसानों की आय का प्रमुख साधन पशुपालन है जो उनकी आर्थिक स्थिति को प्रभावित करती है। जलवायु परिवर्तन भारत जैसे उष्णकटिबंधीय देशों में पशुधन उत्पादन प्रणालियों की स्थिरता के लिए एक बड़ी अड़चन है। हीट स्ट्रैस या उच्च पर्यावरणीय तापमान का डेयरी पशुओं के स्वास्थ्य, प्रजनन क्षमता, उत्पादकता और जैविक कार्यों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। अनुसंधानों से ज्ञात हुआ है कि हीट स्ट्रैस के कारण गर्भाधान दर और गर्भावस्था की दर में 20 से 30 प्रतिशत की कमी आ जाती है।

कई जलवायु कारक जैसे तापमान, आर्द्रता, विकिरण और वायु वेग शामिल हैं जो पशु के पर्यावरण को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते है IPCC (इंटरगवर्नमेंटल पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज) के अनुमानों के अनुसार वर्ष 2030 में वायुमंडलीय CO2 की सांद्रता 400 से 480 पीपीएम तक हो जाएगी। वैश्विक जलवायु परिवर्तन मुख्य रूप से ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन द्वारा उत्पन्न होता है। वैश्विक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में पशुधन क्षेत्र का योगदान 14.5: है और इस प्रकार वायु, जल प्रदूषण, भूमि क्षरण और जैव विविधता में कमी हो सकती है। पशुओं में दुग्ध उत्पादन में कमी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कई पर्यावरणीय कारकों से प्रभावित होती है। पशुओं में हीट स्ट्रैस के कारण उच्च रक्त प्रवाह, उच्च श्वसन दर (>70–80 /मिनट) तथा उच्च शारीरिक तापमान (>102.5 OF½ हो जाता हैं।

ऊष्मा तनावहीट स्ट्रैस के प्रभावः

होमिओस्टैसिस को बनाए रखने हेतु पर्याप्त ऊष्मा को अपव्यतित करने के लिए पशुओं की अक्षमता, उच्च विकिरण ऊर्जा, हवा के तापमान में वृद्धि, गर्भाधान दर में गिरावट, भ्रूण की मृत्यु दर में वृद्धि, प्रजनन कार्य में गिरावट, असंतुलित गोनैडोट्रॉफिन और इस्ट्राडियोल स्राव एवं डिम्बग्रंथि में सिस्ट का निर्माण।

पशुओं के स्वास्थ्य पर जलवायु परिवर्तन का प्रभावः

पशुधन में जलवायु परिवर्तन से जुड़ी कई स्वास्थ्य समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं। इसके अलावा ऊर्जा की कमी पशुओं में स्वास्थ्य और जीवनकाल को प्रभावित करती है। उच्च तापमान (हीट स्ट्रैस) अन्तःस्त्रावी तंत्र, उपापचय दर, ऑक्सीडेटिव स्थिति, ग्लूकोज, प्रोटीन और लिपिड उपापचय, यकृत की कार्यक्षमता (कोलेस्ट्रॉल और एल्ब्यूमिन में कमी) गैर–एस्टेरिफाइड फैटी एसिड (एनईएफए), लार उत्पादन और लार में बाइकार्बोनेट की मात्रा को भी प्रभावित कर सकता है।

पशुओं की प्रजनन क्षमता पर जलवायु परिवर्तन का प्रभावः

नर तथा मादा पशुओं की प्रजनन क्षमता ऊष्मीय तनाव से प्रभावित होती है। यह पशुओं में ऊसाइट परिपक्वता, भ्रूणीय विकास मे कमी, उर्वरता और गर्भावस्था की दर को प्रभावित करता है। उच्च तापमान पशुओं और मुर्गियों मे शुक्राणुओं की सांद्रता और गुणवत्ता को भी प्रभावित करता है। उच्च तापमान अग्र पीयूषग्रंथि से एसीटीएच (ACTH) हार्मोन स्त्रावित करवाता है जो एड्रीनल कॉर्टैक्स से कोर्टिसोल और अन्य ग्लुकोकोर्टिकोइड्स स्त्रावित करवाता है। ग्लुकोकोर्टिकोइड्स के स्राव से ल्यूटिनाइजिंग हार्मोन का स्त्राव बाधित हो जाता है और यह प्रत्यक्ष रूप से प्रजनन क्षमता को प्रभावित करता है। ऊष्मीय तनाव गर्भकाल के दौरान अंतःस्रावी तंत्र को प्रभावित कर सकता है जो गर्भकाल को छोटा, भ्रूणीय गर्भपात तथा नवजात बछड़े के वजन को कम कर सकता है।

पशुओं की उत्पादकता पर जलवायु परिवर्तन का प्रभावः

उच्च तापमान के कारण डेयरी गायों और भैंसों में दुग्ध उत्पादन कम हो जाता है। दुग्ध के प्रोटीन घटकों में उच्च तापमान के कारण लैक्टएल्बूमिन, कैसीन, आईजीजी (IgG½ और आईजीए (IgA) के प्रतिशत में कमी हो जाती हैं। पशुओं में शुष्क पदार्थ का सेवन कम तथा रूपांतरण की दक्षता कम हो जाती है, परिणामस्वरूप दुग्ध उत्पादन कम हो जाता है।

उच्च उत्पादक डेयरी गाय अधिक उपापचय ऊष्मा उत्पन्न करती हैं तथा हीट स्ट्रैस के प्रति अधिक संवेदनशील होती हैं। आमतौर पर भैडे (मूमे) तापमान और आर्द्रता प्रभाव के प्रति अधिक संवेदनशील होती हैं। उच्च तापमान के कारण सूअरों मे स्तनपान अवधि के दौरान भोजन अंतर्ग्रहण मे कमी हो जाती है, जिससे दुग्ध उत्पादन कम हो जाता है और पिगलेट के बचे रहने की संभावना कम हो जाती है।

ऊष्ण तनाव पक्षियों में भोजन अंतर्ग्रहण, प्रोटीन और मांसपेशियों के कैलोरी घटक, शरीर के भार तथा शवों के भार में कमी उत्पन्न करता है। ऊष्ण तनाव मुर्गियों में प्रजनन क्षमता को कम करता हैं और परिणामस्वरूप अंडोत्सर्ग में रुकावट तथा भोजन अंतर्ग्रहण में कमी के कारण अंडे का उत्पादन कम हो जाएगा। उच्च तापमान के कारण अंडे की गुणवत्ता भी नकारात्मक रूप से प्रभावित हो सकती है।

निष्कर्षः

जलवायु परिवर्तन जैसे उच्च तापमान, सापेक्षिक आर्द्रता आदि पशु के स्वास्थ्य, प्रजनन क्षमता और उत्पादकता को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। डेयरी गायों में ऊष्मीय तनाव को कम करने के लिए कुछ तकनीकी जैसे कि वातानुकूलित आवास, स्प्रिंकलर, आहार में परिवर्तन और उचित वेंटिलेशन भविष्य के जलवायु परिवर्तनों को कम करने में कारगर सिद्ध होंगे। गर्मियों में तनाव के दौरान प्रजनन और दूध उत्पादन दोनों को बेहतर बनाने के लिए पशु घरों में शीतलन और उचित वेंटिलेशन सबसे लाभदायक और प्रभावी तरीका है। ऊष्मीय तनाव को कम करने के लिए पशुधन में आनुवंशिक सुधार के लिए चयन तकनीक सहायक सिद्ध होगी। गर्मी के नकारात्मक प्रभावों को कम करने के लिए नयी और वैज्ञानिक तकनीकों का क्रियान्वयन जैसे उचित शीतलन प्रणाली, आहार में राशन समायोजन, प्रजनन प्रोटोकॉल में परिवर्तन और तनाव में कमी आदि डेयरी फार्मों की आर्थिक स्थितियों में सुधार करेगा।

–डॉ. पवन कुमार मित्तल, डॉ. गोविन्द सहाय गौत्तम, डॉ. बरखा गुप्ता,
स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर

हरे चारे को 'हे' के रूप में संरक्षित करना

राजस्थान देश में दुग्ध उत्पादन में द्वितीय स्थान पर है। यहाँ गाय, भेड़, बकरी, ऊँट एवं घोड़ों की उत्तम नस्लें पाई जाती है। इस पशुधन से अधिकतम उत्पादन एवं लाभ लेने हेतु सस्ते एवं संतुलित पशु आहार की आवश्यकता है। हमारे देश मे पशुधन के लिए सूखे एवं हरे चारे तथा दाने की कमी है। बरसात के कुछ महीनों को छोड़कर वर्ष भर हरे चारे की कमी रहती है। इसलिए बरसात के मौसम में हरे चारे एवं चारा फसलों की अधिकता होने पर उनको 'हे' या साइलेज के रूप में संरक्षित कर लेना चाहिए ताकि कमी के समय इसका उपयोग किया जा सके एवं पशुधन से अधिक लाभ लिया जा सके। 'हे' के रूप में हरे चारे को संरक्षित करने पर उसमें पोषक तत्वों की मात्रा अच्छी रहती है यह खाने में स्वादिष्ट होता है तथा उस मौसम में हरे चारे की पूर्ति करता है जब हरे चारे का मौसम नहीं होता है। तूड़ी के बजाय 'हे' में पोषक तत्व अधिक मात्रा में होते है।

'हे' (सूखा हरा चारा) :

'हे' उस सूखे हरे चारे को कहते हैं जिसमें शुष्क पदार्थ लगभग 85–90 प्रतिशत, रंग हरा एवं पतियां अधिक मात्रा में हो। नमी की मात्रा 10–15 प्रतिशत से अधिक नहीं होनी चाहिए क्योंकि इससे अधिक होने पर चारा खराब हो जाता है एवं उसमें फफूंदी लगने का खतरा रहता है।

अच्छे 'हे' की विशेषताएं –

- एक अच्छे 'हे' में पतियों की मात्रा अधिक होनी चाहिए, क्योंकि पतियों में प्रोटीन, विटामिन, खनिज तत्व अधिक होते हैं।
- 'हे' बनाने के लिए हरे चारे/घास को उस समय काटना चाहिए जब वह पुष्प अवस्था में हो क्योकि अधिकतम उसी समय पोषक तत्व होते हैं।
- 'हे' का रंग हरा एवं यह मुलायम तथा स्वादिष्ट होना चाहिए।
- नमी की मात्रा 15 प्रतिशत से अधिक नहीं होनी चाहिए।
- 'हे' में खरपतवार, मिट्टी एवं अनावश्यक पदार्थ नहीं होने चाहिए।

'हे' बनाने हेतु उपयुक्त फसलें

'हे' बनाने के लिए पतले तनें की घासें एवं फसलें उपयुक्त रहती है क्योंकि इनको सुखाने में कम वक्त लगता है। जैसे दूब घास, सेवण घास, जई, एम.पी.चरी., ल्यूसर्न, बर्सीम इत्यादि। मोटे तने की फसलों का भी हे बनाया जा सकता है लेकिन उसको सुखने में ज्यादा समय लगता है।

'हे' बनाने हेतु फसल काटने का समय

जब पौधों में दो तिहाई पुष्प अवस्था आ गई हो उस वक्त हे बनाने हेतु फसल कटाई उत्तम रहती है क्योंकि इस समय पौधों में पोषक तत्वों की मात्रा अधिकतम होती है।

'हे' बनाने की विधियां

1. **खेत में सुखाकर** – मौसम साफ होने पर जब किसान को लगे की अगले पांच–सात रोज बारिश होने की संभावना नहीं है तब यह विधि उपयोगी रहती है। इस विधि में चारे को काटकर उसी जगह कुछ घंटों के लिए छोड़ देते हैं एवं नमी की मात्रा कम होने पर छोटे ढीले बंडल बना लिये जाते हैं। इस प्रकार बार बार पलटकी चारे को इतना सुखा लिया जाता है कि इसमें 10–15 प्रतिशत तक नमी रहे।

2. **चारे को लटकाकर सुखाना**– मौसम पूरी तरह साफ नहीं होने पर इस विधि को अपनाया जा सकता है। इसमें चारे को लटकाकर सुखाया जाता है जिससे नमी की मात्रा जल्दी कम हो इस विधि में निम्न तरीके अपनाये जा सकते है:

- टिपोड पर सुखाना– इसमें तीन लोहे के पोल होते हैं, जिस पर चारे को सुखाया जाता है
- प्रक्षेत्र की तारबंदी पर सुखाना– जिन खेतों के चारों तरफ तारबंदी हो, वहां यह पद्धति अपनाई जाती है। इसमें तारों पर चारे को सुखाया जाता है जससे वह जल्दी सूख जाए। इस विधि में बिना अतिरिक्त खर्च किए काफी चारे को एकसाथ एवं जल्दी सुखाया जा सकता है। समय–समय पर चारे को पलटते रहना चाहिए ताकि हवा का संचरण अधिक हो तथा चारा जल्दी सूख जावे।
- रेक्स पर सुखाना– इस विधि में खेत के ऊँचे स्थान पर लोहे के सरियों को एक दूसरे के क्रॉस लगाकर उस चारे को सुखाया जाता है।

3 **आधुनिक विधि**– जब मौसम अनुकूल नहीं हो तब चारे को छोटे–छोटे टुकड़ों में काटकर निम्न विधियों द्वारा सुखाया जा सकता है:

- विद्युत द्वारा सुखाना– इस विधि में कटे हुए चारे पर गर्म हवा तब तक प्रवाहित कि जाती है जब तक नमी का प्रतिशत 10 से 15 प्रतिशत तक रह जावे। गर्म कमरे जिनका तापमान अधिक हो उसमें भी चारे को सुखाया जा सकता है।
- छत के नीचे सुखाना– इस विधि में चारे के छोटे छोटे टुकड़े कर फर्श या तिरपाल पर पतली परत बनाकर सुखाया जाता है। इस विधि में समय ज्यादा लगता है लेकिन यह सस्ती है।

'हे' को संग्रहित करना–

'हे' को खेत के ऊँचे स्थान पर जहां पानी का भराव नहीं हो, छायादार एवं सूखी जगह पर संग्रह करना चाहिए। आग से विशेष सावधानी बरतनी चाहिए। 'हे' अधिक मात्रा में होने पर मशीन द्वारा बडे–बडे बंडल बनाकर भी संग्रहण किया जा सकता है। इस प्रकार बरसात के मौसम में हरे चारे की अधिकता होने पर हे बनाकर संग्रह कर लिया जाता है। इसकी उपलब्धता नहीं होने पर पशुओं को खिलाकर हरे चारे की पूर्ति की जा सकती है एवं पशुधन से अधिक उत्पादन लिया जा सकता है।

–डॉ. राजेश नेहरा, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–अप्रेल, 2019

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
खुरपका एवं मुँहपका रोग	गाय, भैंस, बकरी, भेड़	भरतपुर, दौसा, बाँसवाड़ा, श्रीगंगानगर, चूरू, जयपुर, सवाई–माधोपुर, धौलपुर, चित्तौड़गढ़, नागौर, अलवर, हनुमानगढ़, सीकर, अजमेर, जालोर, बीकानेर, बाड़मेर
पी.पी.आर. रोग	भेड़, बकरी	सवाई–माधोपुर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, उदयपुर, नागौर, अजमेर, सीकर, कोटा, भीलवाड़ा, पाली
चेचक (माता) रोग	बकरी, भेड़, ऊँट	जयपुर, श्रीगंगानगर, झुंझुंनू, जालोर, बीकानेर, हनुमानगढ, सीकर
गलघोंटू रोग	गाय, भैंस	अलवर, धौलपुर, जयपुर, सवाई–माधोपुर, बूँदी, अजमेर, दौसा, राजसमन्द, झुंझुनूं, बारां, सीकर, पाली, हनुमानगढ़
ठप्पा रोग	गाय, भैंस	जैसलमेर, चित्तौड़गढ़, राजसमन्द, बीकानेर, झुंझुनू, हनुमानगढ़, जालोर, श्रीगंगानगर, जोधपुर
फड़किया रोग	भेड़, बकरी	सवाई–माधोपुर, बाँसवाड़ा, जयपुर, बीकानेर, श्रीगंगानगर, अलवर, नागौर, धौलपुर, टोंक, जोधपुर, कोटा
न्यूमोनिक पाश्चुरेल्लोसिस	गाय, भैंस, भेड़, बकरी	अलवर, टोंक, सीकर, बीकानेर, हनुमानगढ़, झुंझुंनू, भरतपुर
बोटूलिज्म	गाय	जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर, बीकानेर, पाली, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़
कंटेजियस कैप्राइन प्लयूरोन्यूमोनिया	भेड़, बकरी	जयपुर, झुंझुंनू, श्रीगंगानगर, बारां
सर्रा (तिबरसा) रोग	भैंस, ऊँट, गाय	धौलपुर, नागौर, बाँसवाड़ा, हनुमानगढ़, भरतपुर
अन्तः परजीवी– गोल– कृमि, पर्ण–कृमि	गाय, भैंस, भेड़ बकरी	डूँगरपुर, बूँदी, धौलपुर, भरतपुर, सीकर, बाँसवाड़ा, कोटा, राजसमन्द, हनुमानगढ, श्रीगंगानगर
रानीखेत रोग	मुर्गियां	अजमेर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, कोटा
इन्फेक्शियस ब्रोंकाईटिस	मुर्गियां	अजमेर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, कोटा

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. राकेश राव, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, अपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, राजुवास, बीकानेर।
फोन– 0151–2543419, 2544243, 2201183, टोल फ्री नम्बर 18001806224

सफलता की कहानी

आचार बनाने के व्यवसाय में सिद्धहस्त संतोष बनी एक नजीर

संतोष देवी ने घर–गृहस्थी और खेती–बाड़ी में अपनी सहभागिता के साथ–साथ कमाई का एक जरिया घर बैठे ही शुरू करके अपनी आय को बढ़ा लिया। कुछ नया कर गुजरने का जज्बा रखने वाले ही आगे बढ़ते हैं। संतोष देवी एक साधारण गृहणी है जिन्होंने शुरूआत में सिलाई का कार्य किया, परन्तु काम निरन्तर न मिलने के कारण वे अपनी आय से संतुष्ट नहीं थी और वे सिलाई के साथ–साथ अन्य व्यवसाय की खोज में कृषि विज्ञान केन्द्र के विशेषज्ञों के सम्पर्क में आयी। केन्द्र में संचालित आचार बनाने की विधियों के प्रशिक्षण में भाग लेकर विभिन्न तरह के आचार बनाने का कार्य करने का निश्चय किया। वैसे तो उन्हें आचार बनाने की जानकारी थी परन्तु तकनीकी रूप से आचार बनाने में पारंगत होने तथा उसको व्यवसाय का रूप प्रदान करने के अनुभव की कमी के रहते वे आत्म विश्वास नहीं जुटा पा रही थी। कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर के विशेषज्ञों के निरन्तर सम्पर्क में रहकर उन्होंने आचार बनाने के व्यवसाय की सही तकनीकी जानकारी लेकर काम को बढ़ाने का निश्चय किया। संतोष देवी वर्तमान में घरेलू स्तर पर कैरी, आम, नींबू, गाजर, सांगरी, लहसुन, तुम्बा, प्याज, मिर्च इत्यादि के आचार तैयार कर रही है। पिछले छः माह में उन्होंने 60 किलो कैरी का आचार, 50 किलो मिर्च, 30 किलो गाजर, 30 किलो नींबू, 20 किलो ग्वार पाठे, 15 किलो आँवले का तथा 10 किलो लहसुन का आचार तैयार किया। जिससे औसतन 250 रूपये प्रति किलो की दर से कुल 52250 रूपये प्राप्त हुए जिस पर 65 रूपये प्रति किलो आचार निर्माण पर व्यय निकालने पर शुद्ध 38925 रूपये प्राप्त किये। इस प्रकार वे सिलाई के साथ–साथ आचार व्यवसाय से अतिरिक्त आमदनी प्राप्त कर रही है। संतोष देवी ने कृषि विज्ञान केन्द्र नोहर से जुड़कर एक प्रगतिशील एवं आत्मविश्वासी महिला के रूप में पहचान बनाई है जो हम सबके लिए प्रेरणादायी है। **महिला किसान – संतोष देवी, मो. 9785990668**

प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजुवास, बीकानेर

निदेशक की कलम से...

नवजात बछड़े/बछड़ी को दूध पिलाने की विधियां

नवजात बछड़े/बछड़ी को दूध पिलाने की विधियों के बारे में आपके उपयोगी जानकारी यहां दी जा रही हैं : **गाय के थन द्वारा** :– अधिकांशतः नवजात को गाय का दूध सीधे ही थन द्वारा पिलाया जाता है। गाय के थन पर प्रायः धूल–मिट्टी/कीचड़ अथवा गोबर–मूत्र चिपके रहते हैं जिसकी वजह से थनों की बाहरी सतह पर अनेक प्रकार के रोगाणु हो सकते हैं जो नवजात में दस्त एवं अन्य रोग उत्पन्न कर सकते हैं। इसलिए दूध पिलाने से पहले गाय के थनों को स्वच्छ पानी से धोकर साफ करने के पश्चात ही बछड़े–बछड़ी को थनों से दूध पिलाना चाहिए। इससे दूध पिलाने की अन्य विधियों की तुलना में समय एवं मानव श्रम की बचत होती है और गाय आसानी से पावस जाती है। कई बार नवजात के आवश्यकता से अधिक मात्रा में दूध पी लेने से दस्त लग जाते हैं। अतः इसका ख्याल रखना चाहिए। **बोतल द्वारा** :– कुछ व्यवसायिक डेयरी फार्मस् पर नवजात को चूसनी लगी बोतल से दूध पिलाया जाता है। अनाथ बछड़े–बछड़ी को भी इसी विधि द्वारा दूध पिलाया जा सकता है। कई बार पहली ब्यांत में गाय नवजात को सीधे थनों से दूध नहीं पिलाती, ऐसी अवस्था में बछड़े–बछड़ी को उनके शारीरिक भार के अनुसार आवश्यक मात्रा में बोतल द्वारा दूध पिलाना चाहिए। दूध पिलाने से पहले बोतल एवं चूसनी को डिटरजेन्ट/साबुन के घोल एवं गर्म पानी से अच्छी तरह धोकर संक्रमण रहित कर लेना चाहिए। शारीरिक भार के अनुसार आवश्यक नियंत्रित मात्रा में दूध पिलाने से नवजात में दस्त लगने की संभावना भी कम हो जाती है। **साधारण बाल्टी द्वारा** :– इस विधि में बाल्टी या टब/तसले/तगारी में दूध भर कर अपना हाथ दूध में डुबोये रखते हुए तर्जनी या मध्यमा अंगुली को दूध के स्तर से बाहर ऊपर की तरफ रखते हुए नवजात को अंगुली द्वारा दूध चुसाया जाता है। एक–दो दिन ऐसा करने के पश्चात खुले बरतन में रखे दूध को स्वतः सीधे ही पीना सीख जाता है। **विशिष्ट रूप से निर्मित चूसनी (निप्पल) युक्त बाल्टी/ड्रम/टब द्वारा** :– वृहद स्तर के डेयरी फार्मस् पर यह विधि काम में ली जाती है जहां अनेक बछड़े–बछड़ियों को एक साथ दूध पिलाया जाता है। इस विधि में विशिष्ट रूप से निर्मित चूसनी (निप्पल) युक्त बाल्टियों में बछड़े–बछड़ी की आवश्यकतानुसार निर्धारित मात्रा में दूध भर दिया जाता है जिनसे नवजात गाय के थन के समान चूस कर दूध पी लेते हैं। बछड़े–बछड़ियो की संख्यानुसार बाल्टी/टब/ड्रम पर लगायी जाने वाली निप्पल की संख्या को कम या अधिक किया जा सकता है।

–प्रो. अवधेश प्रताप सिंह, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर मो : 9414139188

मुस्कान !

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

माह के प्रथम गुरूवार एवं तृतीय गुरूवार को प्रसारित **''धीणे री बात्यां''** के अन्तर्गत **अप्रेल 2019** में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। पशुपालक भाई उक्त दिवसों को मीडियम वेव पर सायः 5:30 से 6:00 बजे तक इन वार्ताओं को सुनकर लाभ उठाएं।

वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
डॉ. संदीप कुमार शर्मा 9414775879 पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर	प्रतिजैविक दवाओं के उपयोग सम्बन्धित भ्रम व तथ्य	04.04.2019
डॉ. विकास गालव 9717705445 पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर	भेड़–बकरियों के प्रमुख रोग, उनके लक्षण, बचाव व उपचार	18.04.2019

संपादक
प्रो. अवधेश प्रताप सिंह
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
डॉ. नीरज कुमार शर्मा
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. अवधेश प्रताप सिंह द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. अवधेश प्रताप सिंह

पशुचिकित्सा व पशु विज्ञान की जानकारी प्राप्त करने के लिए राजुवास के टोल फ्री नम्बर पर सम्पर्क करें। 1800 180 6224